॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! मेरा जो क्रियात्मक जीवन है मैं उसे सदैव चाहता रहता हूँ कि मेरा जीवन इस संसार में कर्मठता को प्राप्त होता रहे। क्योंकि कर्मठता ही तो जीवन है अकर्मण्यता ही मृत्यु हैं, जिसे हमें जानना है हम सदैव अपने जीवन में विचार-विनिमय करते रहते हैं। हे भगवन्! तू वास्तव में विचारकों का भी विचारक है सदैव अखण्ड रहने वाला है तेरा संसार में कोई विभाजन भी नहीं कर पाता, तू इतना महान् है और विभु माना गया है जो सर्वत्र ओत-प्रोत है। मैं आपके चरणों की वन्दना करने आ रहा हूँ, प्रभु! यह जो अन्तरिक्ष है यह आपका मस्तिष्क ही है, प्रभु! ये जो दिशाएँ हैं यही तो आपकी भुजाएँ हैं यह पृथ्वी ही तो आपके तालू का कार्य कर रही है, भगवन्! आप जो पृथ्वी पर विचरने वाले नदीवत हैं यह आपके नाना स्त्रोत हैं, आपके शरीर के स्त्रोत हैं पर्वत अस्थियों का कार्य करते रहते हैं। भगवन्! यह जो सारा जगत है यह एक ब्रह्म के स्वरूप में मुझे दृष्टिपात आ रहा है।

प्रभु! यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है यह क्या है? इसको मैं जान नहीं पाता, जहाँ केवल अपने ही मानववत को नष्ट किया जाता हो। प्रभु! मुझे यह जगत सुन्दर प्रतीत नहीं होता, मुझे तो केवल एक ब्रह्म ही प्रतीत होता है जिसका यह विराट ब्रह्माण्ड एक शरीरवत् प्रतीत होता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 565 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 640
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. आत्म-चिन्तन	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-22
4. शतपथ ब्राह्मण	पूज्यपाद-गुरुदेव	23-35
5. ऋषियों के उद्‌गार		36
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्रांगण में दिनाँक 13 दिसम्बर 2019 से 15 दिसम्बर 2019 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

आप सभी को दशहरा एवम् दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

आत्म-चिन्तन

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ, जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा में आने वाले नहीं हैं। वो सीमा से रहित हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा हुआ है, जिन्होंने आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान के ऊपर अपना अन्वेषण किया। परन्तु कुछ विज्ञानवेत्ता ऐसे हुए हैं जिन्होंने परमाणुवाद को ही जानने में अपना गौरव स्वीकार किया। परन्तु कुछ विज्ञानवेत्ता ऐसे हुए, जो मानो एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड का दर्शन करते रहे हैं। मेरे प्यारे! एक परमाणु का विभाजन किया, और उसमें इतना ब्रह्माण्ड निहित होता है कि उसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण, वे प्रायः अपने में दृष्टिपात करते रहे हैं। तो आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में तो ले जाऊँगा नहीं। केवल विचार यह कि हमारे यहाँ कुछ विज्ञानवेत्ता ऐसे हुए हैं, जिन्होंने मुनिवरों! देखो आध्यात्मिकवाद को और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में महान् कहलाए गए।

आनन्द की अनुभूति

जब हम इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं, तो परमात्मा का, यह परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी जगत, मेरे प्यारे! हमारे समीप आता रहता है। और विचारते रहते हैं कि वह परमपिता परमात्मा इतना अनूठा है, उसका ज्ञान और विज्ञान भी इतना अनूठा है। परन्तु उसको हम उपास्यदेव अपना स्वीकार करते हुए, मानो अपने में उसकी प्रतिभा का चिन्तन और मनन करते रहें, जिससे हमारा अन्तर्हृदय आन्तरिक जगत पवित्र बनता हुआ और इस संसार से हम पार हो जाए। जो मान-अपमान वाला सागर है, इस सागर से प्रत्येक प्राणी बेटा! अपने को दूरी ले जाना चाहता है। मानव देखो इसी के ऊपर अन्वेषण और विचार-विनिमय करता रहा है। एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो जाता है सूर्य मानो अस्ताचल को चला जाता है। रात्रि छा जाती है परन्तु रात्रि के गर्भ में प्रवेश करके वह अपने में ध्वनित होता रहता है और ध्वनियों को अपने में धारण करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा की इस आनन्दमयी ध्वनि को अपनी ध्वनि से मुनिवरों! देखो उसका समन्वय करने लगता है। तो हमारे ऋषि-मुनियों ने बेटा! जहाँ भौतिक विज्ञान को जानने का प्रयास किया, वहाँ आध्यात्मिक विज्ञान में भी उन्होंने प्रवेश किया। क्योंकि जब तक आध्यात्मिक और भौतिकवाद का समन्वय नहीं हो जाता, तब तक मुनिवरों! देखो हमें आनन्द की अनुभूति नहीं होती और हम केवल एक विज्ञान को ले करके गमन करते हैं। भौतिक विज्ञान को, अणु और परमाणु को ले करके जब हम गमन करते हैं तो मानो देखो यह ब्रह्माण्ड और अणु में हम प्रवेश तो हो जाते हैं, परन्तु अपङ्ग बन जाते हैं। और अपङ्ग जब तक रहते हैं, जब तक हमें आध्यात्मिक विज्ञान में हम जब तक प्रवेश नहीं हो जाते। और आध्यात्मिकवाद व भौतिक विज्ञान का, दोनों का एक, दोनों मनके एक सूत्र में जब तक नहीं पिरोये जाते तब तक मानव बेटा! अपङ्ग बना ही रहता है। तो आज मैं मुनिवरों! देखो इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं,

केवल ये कि आज का हमारा वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। उसका ''गुणाम् ब्रह्माः गुणा ध्यानम्'' अपने में हम धारयामी बने रहें।

मेरे पुत्रों! आज का वेद का मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी विज्ञानवेत्ता है, जो विज्ञानमयी स्वरूप है, वेत्ता ही नहीं। क्योंकि विज्ञान उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वो उसी में वास कर रहा है। वह विज्ञान से पृथक् नहीं हो सकता। इसीलिए हम देखो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव अपने में धारयामी बने रहें। और धारणा बनाए रहें कि हम परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत को अपने में पान करना चाहते हैं। अपने में धारण करना चाहते हैं। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें और उसके आनन्दमयी स्त्रोतों को अपने में धारण करते रहें। क्योंकि संसार में जितना भी मानव क्रियाकलाप कर रहा है, जितना भी मानव अपने में अपनेपन को अपने में धारण कर रहा है और वह जितने भी अनुष्ठान करता है, याग करता है, ध्यानावस्थित हो जाता है, प्राणायाम करता है, रेचक और कुम्भक और पूरक में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! वो इसलिए कि हम, मैं परमआनन्द को प्राप्त करने लगूँ। प्रत्येक मानव की परम्परागतों से ही एक ही धारणा रही है कि मैं आनन्द को प्राप्त करने जाऊँ। और मैं जिस आनन्द से मेरा विच्छेद हो गया है, उस आनन्द को मैं पुनः से अपने में धारण करने लगूँ।

आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें, मानो विशेषता में तो नहीं ले जाऊँगा। आज का एक वेद मन्त्र आ रहा था ''यज्ञम् ब्रहा ब्रहे कृतम् दिव्यम् ब्रह्माः वर्णस्सुतम् ब्रह्माः''। मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें व्याख्या नहीं कर पाऊँगा, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय देना हमारा कर्त्तव्य है। मेरे पुत्रों! आओ आज मैं, आज का हमारा वेद

मन्त्र और वेदों की प्रतिभा हमें बहुत ऊर्ध्वा में गमन करा रही है। परन्तु आज का वेद का मन्त्र याग के ऊपर बड़ा बल देता चला जाता है। कई समय से बेटा! आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों की विवेचना हो रही थी। आज भी वेदों में इस प्रकार के हमारे पठन-पाठन में मन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा था कि हम आध्यात्मिक और भौतिकवाद में पुनः से प्रवेश कर जाएँ। परन्तु देखो इसका कोई मापदण्ड नहीं है, क्या कितना आध्यात्मिकवाद बेटा! विचार-विनिमय करता हुआ अन्त में मानव मौन हो जाता है। परन्तु विचार और उसकी प्रतिभा समाप्त नहीं होती। इसी प्रकार एक-एक इन्द्रिय के ऊपर अन्वेषण करते रहो, विचार विनिमय करते रहो। बेटा! अन्त में मौन हो जाओंगे और मौन होकर के इन्द्रिय के विषय से दूरी चले जाओंगे।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यालय में आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान का समन्वय

मेरे पुत्रों! मैं, इस सम्बन्ध में भी नहीं, आज केवल तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ कि हमारे ऋषि-मुनियों ने, बेटा! अपने यहाँ कितना अन्वेषण किया है। उन्होंने आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान को मानो एक सूत्र में लाने का उन्होंने प्रयास किया है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो संङ्कलमम् ब्रव्हा सङ्कलम में सर्वत्र जगत उन्होंने स्वीकार किया है। परन्तु देखो उन्होंने एक-एक वस्तु के ऊपर कितना विश्लेषण किया है। विश्लेषण यदि हम करने लगें तो समय की आवश्यकता होती है। आज तो केवल तुम्हें मैं परिचय कराने जाऊँगा उन वाक्यों का। आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ मुनिवरों! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने यहाँ प्रातःकालीन विद्यालय में याग कर रहे थे। ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं। बेटा! याग जैसे ही सम्पन्न हुआ और याग के सम्पन्न होने के पश्चात, मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारी उपस्थित हो गए।

ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! आपसे हम कुछ प्रश्न करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, बोलो तुम क्या चाहते हो। मेरे प्यारे! देखो उन्हीं ब्रह्मचारियों में एक यजमान बना, एक मानो प्रश्नकर्त्ता बन गया। जिज्ञासु बन गया। मेरे प्यारे! देखो, जिज्ञासु ने कहा हे प्रभु! ये यजमान उपस्थित हैं, और ये यजमान याग करना चाहते हैं तो कितने होता होने चाहिए इनके याग में?

याग का क्रम

मेरे पुत्रों! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले, क्या देखो, हमारे यहाँ तो वेद मन्त्रों में ऐसा आया है कि यजमान यदि याग करना चाहता है तो उसके चौबीस होता होने चाहिए और चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। यागाम् भवतम् ब्रह्मेः। क्योंकि ये जो परमपिता परमात्मा का जो ये ब्रह्माण्ड है ये भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। इसमें मानो देखो आत्मा यजमान हैं। पञ्चमहाभूत बेटा! होता, उद्गाता बने हुए हैं, और परमपिता परमात्मा स्वयँ ब्रह्मा बन करके इसका संचालन कर रहा है। इसी प्रकार ये जो ब्रह्मणे वृतम् जो यजमान याग करना चाहता है, चौबीस होता होने चाहिए। इसी प्रकार परमात्मा के इस संसार रूपी यज्ञशाला में भी चौबीस होता कहलाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब ऐसा कहा, तो ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु! हम याग, यजमान कहता है, क्या भगवन् यजमान याग करना चाहता है तो कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा, यजमान याग करना चाहता है तो सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, पुनः जब ये प्रश्न किया, क्या महाराज यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए? तो उन्होंने कहा, याज्ञवल्क्य मुनि बोले की ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। पुनः जब ब्रह्मचारी ने ये प्रश्न किया जिज्ञासा से किया हे प्रभु! यजमान कहता है कि मैं याग करना चाहता हूँ, कितने होता हों? उन्होंने कहा देखो नौ होताओं के द्वारा तुम्हारा याग सम्पन्न होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो पुनः जब ये प्रश्न किया, क्या यजमान याग

करना चाहता है प्रभु, कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः प्रश्न किया। उन्होंने कहा, यजमान याग करना चाहता है, कितने होता? उन्होंने कहा पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। पुनः जब ये प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है, कितने होता? उन्होंने कहा, तीन होताओं के द्वारा। जब पुनः प्रश्न किया तो बेटा! दो रह गए। दो के असुतम, पुनः प्रश्न करने के पश्चात् बेटा! एक होता रह गया।

चौबीस होता

विचार आता रहता है। बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस संसार को मापने का प्रयास किया। और आध्यात्मिक और भौतिकवाद से इस संसार को मापने का प्रयास किया। मेरे प्यारे! देखो, अब ब्रह्मचारी कहता है, हे प्रभु! ये जो चौबीस होता कौन से वे, जिनके द्वारा यजमान याग करना चाहता है? मेरे प्यारे! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज कुछ समय मौन हो गए और मौन हो करके, ब्रह्मचारी के प्रश्नों का उत्तर देने लगे। उन्होंने कहा, यजमान याग करना चाहता है, परन्तु यागाम् भवतम् ब्रह्मणे, कृतम् दिव्यप्रव्हा कृतम् दिव्यलोकाः क्या यजमान जब याग करना चाहता है तो कितने होता जानना चाहते हो? मानो चौबीस होता कहलाते हैं। जब परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि का सृजन किया, यज्ञशाला का सृजन किया तो मानो ये शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया। यहाँ बेटा! ऋषि-मुनियों की बड़ी विचित्र शैली रही है चिन्तन और मनन करने की। आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद को दोनों को एक ही सूत्र में लाने का बेटा! ऋषि ने प्रयास किया है। वेदात्म ब्रह्मेः वेद मन्त्रों के आधार पर ऋषि कहता है, क्या चौबीस होता, अमृतम् देखो, दस इन्द्रियाँ हैं और दस प्राण हैं और पञ्चमहाभूत। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मणे कृतम् देवत्वाम्। मुनिवरों! देखो उन पञ्चमहाभूतों में, मुनिवरों! देखो वह चित्त का मण्डल भी आ जाता

है। तो मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार ये चतुष अन्तःकरण कहलाया गया है और उसमें दस प्राण, दस इन्द्रियाँ। तो मुनिवरों! देखो ये चौबीस होताओं की यज्ञशाला है बेटा! जिसमें यजमान याग कर रहा है, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय मुनिवरों! देखो प्राणों से याग कर रहा है और वह अपने में गतिवान हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जानना चाहता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह **मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार, ये अन्तःकरण कहलाता है** इसमें बेटा! जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। मेरे पुत्रों! देखो इसको मनम् ब्रहे, देखो मन और मन की ऊर्ध्वधारा, मुनिवरों! देखो बुद्धि और बुद्धि से मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार ये चतुष अन्तःकरण, बेटा! बुद्धि के नाना प्रकार हैं, मनस्तत्त्व के नाना प्रकार हैं। व्याख्याकार तो बेटा! इसके ऊपर नाना पोथियों का निर्माण कर लेता है। परन्तु देखो संक्षिप्त परिचय ये है, क्या मुनिवरों! देखो बुद्धि के चार प्रकार माने हैं, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती हैं। ये चार प्रकार की बुद्धियाँ हैं। और भी नाना बुद्धियाँ मानी हैं जिसे हम सुमिता कहते हैं, गौ कहते हैं, धेनु कहते हैं, रेणुका कहते हैं, सम्भूति कहते हैं। बुद्धि के नाना प्रकार माने गए हैं बेटा! इनके नाना पर्यायवाची शब्द आते रहते हैं। तो विचार आता रहता है, मुनिवरों! देखो मन के भी नाना प्रकार के मानो पर्यायवाची हैं। इसको मन भी कहते हैं, मनस्तत्त्व भी कहते हैं, वक्र भी कहते हैं, व्रति भी कहते हैं, इसको भी नाना प्रकार से माना गया है। परन्तु मैं इनकी विवेचना तो तुम्हें नहीं दे सकूँगा क्योंकि मैं व्याख्यान देने नहीं आया हूँ, तुम्हें इनका परिचय देने के लिए आया हूँ। मेरे पुत्रों! देखो ब्रह्मणे व्रहा, मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार, नाना प्रकार माने गए हैं। बेटा! देखो दस प्राण हैं, देखो जिनमें प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान। मेरे पुत्रों! देखो, ये मानो देखो पाँच प्राण हैं, और पाँच उपप्राण हैं, नाग, देवदत्त, धनञ्जय और कुरू और कृकल ये दस प्राण कहलाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो इन दसों प्राणों का जो समावेश जानता है, दस प्राणों

की प्रतिभा को जानता है जिसका मानव शरीर से और ब्रह्माण्ड से क्या-क्या समन्वय रहता है, और प्राण को हम, कौन से प्राण को हम अपने में धारण करके हम चित्त के मण्डल को जान सकते हैं।

बेटा! मुझे, एक वाक्य स्मरण आ रहा है। वायु गोत्र में बेटा! एक सुमिता नाम के ऋषि हुए। उन्होंने बेटा! देखो पचासी वर्षों तक मौन रह करके और वायु का सेवन करके, अन्न जल का सेवन करके समय-समय पर, मेरे प्यारे! देखो मौन रह करके कोई वाक्य भी उच्चारण नहीं किया था। तो उन्होंने बेटा! अपने पचासी जन्मों के संस्कारों को जान सके थे। क्या एक सौ पचासी जन्मों में मानो देखो मेरी क्या-क्या गतियाँ रही हैं, उनको जान गए थे। आगे के जीवनों को भी बेटा! देखो योगेश्वर जान सकता है। आज बेटा! मैं इस सम्बन्ध में या प्राण के सम्बन्ध में कुछ विशेषता नहीं, केवल यह, क्या मुनिवरों! देखो इन प्राणों को जाना जाए। जैसे मैने पुरातन काल में कहा है, क्या माता जब अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती है तो बेटा! मैं ये कहा करता हूँ, पुरातन काल में भी, मेरे प्यारे! मेरी पुत्रियाँ, मानो विद्यालय में प्राणायाम की शिक्षा का अध्ययन होता रहा है। प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में बेटा! जब इनको सिमट लिया जाता है, तो उस समय मेरी प्यारी माता अपने गर्भ के शिशु से वार्त्ता प्रगट कर लेती है।

मेरे प्यारे! इसी प्रकार जब मानव इस प्रकार के प्राणायाम करने लगता है तो अन्तर्मुखी हो करके बेटा! देखो, बाह्य जगत से विमुख हो करके व आन्तरिक जगत में मेरे प्यारे! देखो अपने में अपने को ले जाता है। बाह्य जगत से वो सिमट जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो ये प्राण को जानना चाहिए। तो मानो देखो पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन इन्द्रियों के ऊपर अन्वेषण होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने ये कहा, क्या मानो ये चौबीस खम्बों वाला ब्रह्माण्ड है, चौबीस खम्बों वाला ये मानव शरीर है और चौबीस खम्बों की बेटा! ये सुन्दर

यज्ञशाला है इसमें यजमान याग कर रहा है। जिसमें बेटा! यजमान स्वाहा कह करके अपनी वाणी को, अपने चित्रों को और अपने क्रियाकलापों को बेटा! वो द्यौ में प्रवेश करा देता है। बेटा! द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं। वही समय-समय पर बेटा! चित्त मण्डल में प्रवेश होते रहते हैं। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं, केवल विचार-विनिमय यही है कि हम अपने में अपनेपन को इतना जानने लगें, क्या अपने में ही मुनिवरों! देखो सिमट जाए। और अपने को ही जगत में, बाह्य जगत भी अपने में ही सिमट जाए, हम उसमें सिमट जाएँ वह हम में सिमट जाए तो बेटा! एक आनन्द की अनुभूति होने लगती है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं, केवल विचार-विनिमय यह कि मुनिवरों! देखो ऋषि कहता है, वेद का आचार्य कहता है, हे ब्रह्मचारियों! हे याज्ञिक पुरुषों! तुम याग करना चाहते हो, तो मानो तुम ये चौबीस होताओं का याग प्रारम्भ करो जिससे तुम्हारी प्रत्येक इन्द्रियाँ पवित्र बन जाए और तुम ब्रह्माण्ड में ब्रह्मण्डित हो जाओ। मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवलक्य मुनि महाराज ने यह वाक्य कहा।

सत्रह होता

जब यह कहा, तो उन्होंने कहा, हे भगवन्! इन वाक्यों को तो हम पूर्व ही जानते रहे हैं। हम यह जानना चाहते हैं, प्रभु देखो सत्रह होता के द्वारा जो यजमान याग करता है वो सत्रह होता कौन से हैं? उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारियों! यह जो मानव का जो स्थूल जगत है, स्थूल जो शरीर है, इसमें चौबीस होता हैं। जब इसको त्याग देता है तो मानो देखो सूक्ष्म शरीर रह जाता है। और वह सूक्ष्म शरीर में मुनिवरों! देखो, दस प्राण हैं, दस प्राण, मन, बुद्धि और मुनिवरों! देखो, ये प्रकृति की अमृताम् और देखो ये पञ्च वासनाएँ रह जाती हैं। तो ये मेरे पुत्रों! देखो ये सत्रह होता, सत्रह अमृताम्, सत्रह तत्वों का यह शरीर कहलाता है। तो आओ मेरे पुत्रों! देखो ''सतम् ब्रह्माः क्रम लोकम् वर्णवृत्ताः, वेदम् ब्रह्माः कृतम्

लोकम् ब्रहेस्सुताः'' ये सत्रह तत्वों का शरीर माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो जो मानव याज्ञिक बना हुआ है और वो याग करना चाहता है, यह आध्यात्मिक याग बन जाता है। इसको आध्यात्मिकवाद कहते हैं।

मेरे पुत्रों! इसकी आवृत्तियों में बेटा! एक शरीर और है जिसको हमारे यहाँ कारण लिङ्ग के रूप में वर्णित किया गया है। वह **कारण शरीर** कहलाता है जिसमें बेटा! ज्ञान और प्रयत्न रह जाता है। **प्रकृति का मण्डल हमारे यहाँ ज्ञान का माध्यम है और क्रिया का माध्यम बेटा! प्राण, जिसको हम प्रयत्न के रूप में वर्णित करते रहते हैं।** तो मेरे पुत्रों! देखो आज मैं तुम्हें दर्शनों में ले जा रहा हूँ, ये मानवीय दर्शन है। तो वेद का ऋषि कहता है क्या ये जो सत्रह होताओं का ये मानो ये यज्ञशाला में याग करने वाले होताजन हैं, ये सत्रह होताओं को जानने वाला, पञ्चमहाभूतों को और मुनिवरों! देखो, दस प्राण और मन और बुद्धि को, इन सर्वत्र को जानता हुआ मुनिवरों! देखो वह सत्रह होताओं का याग यजमान करने वाला जब बन जाता है तो बेटा! उसे आनन्द की अनुभूति होने लगती है। वह आनन्द के स्त्रोतों को जानने लगता है। **मुनिवरों! देखो, वह जब कारण शरीर में प्रवेश हो जाता है, तो मुनिवरों! देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है।** इसे वह अपने में देखो अपनापन ही दृष्टिपात आता है।

आओ मेरे पुत्रों! ऋषि-मुनियों की यह शैली रही है, विचार-विनिमय करने की कि ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में। तो मुनिवरों! देखो ये दोनों प्रकार की शैली हमारे ऋषि-मुनियों की बड़ी विचित्रतम रही है। आदि ऋषियों ने इसके ऊपर बड़ी टिप्पणियाँ और विचार-विनिमय दिए हैं। और जिज्ञासुओं ने अपनी जिज्ञासाएँ प्रगट की हैं।

ग्यारह होता

मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारियों ने पुनः जब प्रश्न किया कि महाराज,

ग्यारह होता कौन से हैं, जिनके द्वारा याग करता है यजमान? उन्होंने कहा ग्यारह होता, दस इन्द्रियाँ ग्यारहवाँ मन कहलाता है। जब भी यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो तो वह मानो देखो दसों इन्द्रियों को और देखो, ये ग्याहरवाँ जो मन है, इससे जो कटिबद्ध रहते हैं, इनको एकाग्र करता हुआ जब वह याग प्रारम्भ करता है तो उसका बेटा! देखो बाह्य याग और आन्तरिक याग, दोनों ही पवित्रता को प्राप्त हो जाते हैं। वे पवित्रतम् बन जाते हैं। तो दोनों प्रकार के यागों में मानव को संलग्न रहना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, वह पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। मेरे पुत्रों! देखो, **ज्ञानेन्द्रियों का जो साकल्य बनाना जानता है, वह दोनों प्रकार के याग को जानता है। और जो मुनिवरों! देखो यह अमृतम्, अवृतम् देखो जो कर्मेन्द्रियाँ हैं, जो इनको जानता है वह बाह्य जगत को जानता है।** मेरे पुत्रों! देखो, दोनों इन्द्रियों के ऊपर हमें अन्वेषण करना चाहिए, विचार-विनिमय करना चाहिए। बेटा! बाह्य जगत प्रत्येक इन्द्रियों में समाहित रहता है पाँच कर्मेन्द्रियों में और जितना भी ये परमाणुवाद है, अणुवाद है, विज्ञानवाद है, प्रकृतिवाद है, ब्रह्मचरिष्यामिवाद है बेटा! ये सर्वत्र मानो देखो ज्ञानेन्द्रियों में समाहित रहता है। मेरे प्यारे! ज्ञानेन्द्रियों के विषयों को जानता-जानता, मानव बहुत दूरी चला जाता है। विचारता रहता है, अन्त में मौन हो जाता है। सिमटकर हृदय में आ जाता है। प्रत्येक इन्द्रियों का विषय जब हृदय में समिट जाता है तो मुनिवरों! देखो, हृदय अगममयी बन जाता है, पवित्रमयी बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वेद का ऋषि कहता है। हे ब्रह्मचारियों देखो, दस इन्द्रियाँ है, ग्यारहवाँ मन है। मन से ये इन्द्रियों का विषय कटिबद्ध रहता है। क्योंकि ये **जो मन है, ये प्रकृति का सबसे सूक्ष्म तन्तु माना गया है।** क्योंकि हमारे यहाँ जब भी ब्रह्मचरिष्यामि की विवेचना हुई है तो ब्रह्म और चरि दो प्रकार के शब्द बेटा! मानव के समीप आए हैं। वह दोनों शब्द हैं, ब्रह्म और चरि। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं

प्रकृति को। मेरे पुत्रों! देखो, चरि और ब्रह्म का जब दोनों का समावेश होता है तो ये जगत रचना में आ जाता है। ये मानो देखो उग्रता, जब उत्पन्न हो जाती है तो उग्रता को उग्रता ने उग्रता को प्रदान कर दिया। ये कैसा अनुपम जगत है पुत्रों। ये कैसा अद्भुत है, क्या मानो देखो परमात्मा उग्रवादी बना, प्रकृति से सम्मिलान हुआ, रचना हो गयी और वही मुनिवरों! देखो, उग्रवाद को समर्पित करके अपने में सिमट गयी। तो विचार आता रहता है, बेटा! उग्र ने उग्रवाद को जन्म दे करके उसी को मानो उसी में वो सिमट जाता है। उसी में ओत-प्रोत हो जाता है। तो बेटा! देखो यह कैसा अद्भुत जगत है।

आज मैं प्रभु की रचना के ऊपर विचार-विनिमय हम न करते हुए, विचार केवल ये कि मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है और वह तन्तु ब्रहे कृतम् कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म और चरि अपने में जब धारयामि बनता है तो ब्रह्म और चरि को जानता है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को। जब ब्रह्मचारी दोनों का मन्थन करता है तो बेटा! वो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। वह ब्रह्मसूत्र को, ब्रह्मसूत्र को अपने में और अपने को ब्रह्मसूत्र में पिरो लेता है। तो विचार आता रहता है बेटा! वो याज्ञिक याग कर रहा है। दस इन्द्रियों के द्वारा और ग्याहरवाँ जो मन है, ये होता कहलाते हैं। बेटा! देखो इनमें वो सिमट जाता है अपने में ही अपने में, धारयामि बन जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! ऋषि ने कहा प्रभु, ये मनस्तत्त्व की धारा, उन्होंने कहा ये जो मनस्तत्त्व है, ये प्राण की गति से स्थिर रहता है। मानो यदि इसमें गति नहीं दी जाएगी, ये प्राण की गति नहीं होगी, तो न तो मन ही गतिवान हो सकेगा, और न इन्द्रियाँ ही गतिवान हो सकेंगी। तो इसलिए देखो, गति देने वाला प्राण है और यह प्राण मानो देखो, आत्मा के सन्निधान मात्र से, मुनिवरों! देखो उसमें ज्ञान और प्रयत्न की क्षमता हो जाती है। दोनों का एक कृतियों में रत्त हो जाते

हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि आगे कहता है ''सम्भव ब्रव्हे यश्चनम् ब्रह्माः लोकाम् हिरण्यम् वृथाः'' मेरे प्यारे! देखो, वह जो हिरण्य है जो रथ ब्रव्हा, मेरे पुत्रों! संसार का जो रथी कहलाता है मानो इसको गमन करा रहा है, गति दे रहा है। संसार यह स्वतः अपने में गतिवान हो रहा है। तो आओ मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि क्या कहता है, ब्रह्मचारियों को। हे ब्रह्मचारियों! देखो, दस इन्द्री ग्याहरवाँ मन और ये मानो देखो, याज्ञिक यजमान याग करता है तो उसका याग सफलता को प्राप्त हो जाता है। यदि देखो, इन्द्रियाँ और मन वशीभूत नहीं हैं, तो वह याग उसका सम्पन्न न हो सकेगा। तो इसीलिए उन्होंने कहा, ये ग्यारह होताओं के द्वारा यजमान को याग करना चाहिए।

नौ होता

मेरे पुत्रों! ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु आपने नौ के, नौ होताओं से कहा था। वह नौ होता कौन से हैं? उन्होंने कहा, नौ होता वह कहलाते हैं, हमारा जब परमपिता परमात्मा ने शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया तो मानो इसमें नौ द्वार उस प्रभु ने निर्धारित किए हैं। और नौ द्वारों को जब वो एकाग्र करता है, जो याज्ञिक याग करता है तो नौ जो देवता विद्यमान हैं प्रत्येक द्वार पर। नौ ऋषि विद्यमान हैं। उन देवताओं की प्रतिभा के आश्रित हो करके, बेटा! जब वो आहुति देता है, स्वाहा करता है, यजमान याग करता है, तो बेटा! अपने में वो सफलता को प्राप्त हो जाता है। आओ मेरे प्यारे! मैं विवेचना नहीं देने आया हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। इनकी विवेचना यदि मैं देने लगूँगा तो बेटा! बहुत समय की आवश्यकता है। विचार केवल यह कि नौ द्वारों का उन्होंने कुछ वर्णन किया, उन्होंने कहा नौ द्वारों को एकाग्र करो मानो देखो उसी से यजमान को याग करना चाहिए। नौ द्वार उसके अपने में कटिबद्ध रहने चाहिए।

सप्त होता

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचाारियों ने कहा प्रभु! ये वाक्य तो हमें, मेरी माता भी वर्णन कराती रही हैं। हम यह जानना चाहते हैं, क्या आपने सप्त होता कहा था। उन्होंने कहा अमृतम्, सात होताओं के द्वारा याग होता है। मेरे पुत्रों! देखो द्यौ अमृते, देखो विश्वम् ब्रव्हा कष्टतम् बृव्ही, मानो देखो ये नौ द्वार कहलाते हैं। नौ होता कहलाते हैं। बेटा! देखो, जो कण्ठ से ऊपरले भाग में रहते हैं, ये नौ द्वार हैं, नौ होता हैं। इनके द्वारा यजमान याग करता है। क्योंकि जो इसके नीचे का भाग है, जब ये सप्त होता एकाग्र हो जाते हैं तो मानो देखो निचरला भाग उसका शून्यवत हो जाता है, अपूती हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है ''सम्भव ब्रव्हे कृतम्'' क्या मानो देखो सप्त होताओं के द्वारा याज्ञिक याग करने वाला बने। मेरे पुत्रों! यजमान की यज्ञशाला में सात होता हों और वह होता जितेन्द्रिय और इन्द्रियों को मानो अपने में वशीभूत करने वाले, और मानो देखो वह सप्त होता बन करके देखो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत में, दोनों में यही चिन्तन मनन करता रहे, याग करता रहे।

पञ्च होता

मेरे पुत्रों! देखो, वेद के ऋषि ने जब ये वर्णन किया तो ब्रह्मचारी ने कहा, प्रभु! आपने पञ्च होता का वर्णन किया था। उन्होंने कहा, पञ्च होता, मानो देखो ये ''पञ्चम् ब्रव्हा कृतम् होतप्रव्हा'' वेद का वाक्य कहता है, क्या ये पञ्च होता कौन से बेटा! देखो, गुरुत्व, तरलत्व, तेजोमयी और गति और मुनिवरों! देखो इसमें वो भ्रमण करता है जब, तो ये मानो देखो पञ्च होता कहलाते हैं। पाँच इन्द्रियाँ इसी प्रकार कहलायी जाती हैं। जिनका इनसे सबसे समन्वय रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, जैसे नेत्रों का देवता अग्नि है, और मुनिवरों! देखो अमृतम् ब्रहे, रसों का देवता ''रसस्वादनम् ब्रहे कृतम् देवत्वम्'' देखो आपो है। मेरे पुत्रों! गुरुत्व मानो देखो, पृथ्वी की आभा कहलाती है। इसी प्रकार जो गति हो रही है, वह

तेजोमयी इतना वो अग्नि का गृह है और मुनिवरों! देखो गति वायु का जिसमें भ्रमण कर रहे हैं। इसी प्रकार बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ से और वर्तमान के काल तक बेटा! जितने भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं, वह पाँच प्रकार की गतियों पर निर्धारित विज्ञान रहा है। और तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी। मुनिवरों! ये तीन परमाणु हैं। और गति देने वाली परमाणुओं को वायु है। और जिसमें वो गतिवान हो रहे हैं उसको अन्तरिक्ष कहते हैं। उसे अवकाश कहा जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, यह विज्ञान अपनी आभा में गतिवान हो रहा है। और पाँच प्रकार की गति हैं मुनिवरों! इस प्रकृति की। मुनिवरों! देखो सबसे प्रथम प्रसारण, ध्रुवा, ऊर्ध्वा और मुनिवरों! देखो आङ्कुचन और एक कृति कहलाती है। तो मानो ये पञ्च गतियाँ मानी गयी हैं। जिनको हमारे यहाँ बेटा! प्रसारण और गति में परणित कर दिया जाता है। और उसी को ध्रुवा और ऊर्ध्वा में, और उसी की मुनिवरों! आङ्कुचन शक्ति ला करके बेटा! देखो विज्ञान अपनी आभा में गमन करता रहता है। वैज्ञानिक अपनी-अपनी प्रतिभा में प्रतिभाषित होते रहे हैं। तो बेटा! देखों ये पाँच गतियाँ हैं, और तीन परमाणु हैं और मुनिवरों! देखो वायु इनको गति दे रहा है। ''सम्भवम् ब्रह्माः कृतमः'' मेरे पुत्रों! देखो, ये गतिवान हो रहा है जगत। अपने में गतिवान होता हुआ दृष्टिपात आ रहा है। जब मेरे पुत्रों! देखो विज्ञान अपने कक्ष में गमन करता है तो मेरे प्यारे! इस ब्रह्माण्ड को माप लेता है पाँचो में ही। और देखो जब परमाणुवाद को मापने लगता है तो तीन परमाणुओं को जान करके उनका ही मिलान करता हुआ नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता रहा है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, केवल ये, क्या यजमान जब याग करता है तो बेटा! उसके पाँच होता होने चाहिए। मानो देखो उन पाँचों होताओं के द्वारा जो यजमान याग करता है वो धन्य हो जाता है। वो इस ब्रह्माण्ड को अपने में मापने लगता है। मेरे पुत्रों! ये बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों में प्रवेश कर जाता है।

तीन होता

मेरे पुत्रों! देखो जिज्ञासु ने कहा, हे भगवन्! यजमान ने ये कहा कि आपने तीन होताओं का नामोकरण भी तो किया है। उन्होंने कहा तीन होता, रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण कहलाते हैं। मानो देखो सतोगुण जितना भी पालन करने का, जितना भी क्रियाकलाप है इस संसार में, वो सतोगुण से होता है। मानो इसीलिए परमपिता परमात्मा को विष्णु कहते हैं। क्योंकि विष्णु पालन करने वाला है। और पालना करने वालो में बेटा! देखो, परमपिता परमात्मा, मेरी प्यारी माता, आत्मा, सूर्य, नाना रूप हैं बेटा! जो पालन कर रहा है। मानो देखो **जो पालन करता है, उसी का नाम विष्णु है। उसी का नाम मेरे पुत्रों! देखो सतोगुण में माना गया है।** जितना भी पालन होता है वो सब सतोगुणी रूपों में ही पालन होता रहता है। कोई भी प्राणी हो बेटा! देखो चाहे वह स्थावर सृष्टि हो, मानो जङ्गम हो, मुनिवरों! देखो, अण्डज हो, कोई भी प्रकार की सृष्टि हो। सर्वत्रता में बेटा! तीनों गुण प्राप्त होते रहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण, ये तीनों गुणों में मानो सतोगुण विशिष्ट माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो तमोगुणम् ब्रह्माः और दूसरा जो गुण है वो रजोगुण है जिसमें शासन होता है। उस शासन में भी पालना की मानो देखो एक भावना होती है। उसमें भी सतोगुण मिश्रित रहता है बेटा! और सतोगुण में भी रजोगुण मिश्रित रहता है। बड़ी विचित्रता है उस प्रभु की। बेटा! कितनी महानता से उन्होंने इस मानव जगत की रचना की है और मानवीयता की रचना की है बेटा! जब मैं उसके विज्ञान के ऊपर, हम विचार करने लगते हैं तो बेटा! अन्तर्हृदय गद्गद् हो जाता है और मैं ये कहा करता हूँ, हे प्रभु! तू कितना अनूठा है, कितना महान् है, कितना पवित्र है। मानो तेरे गुणों का गुणगान गाने के लिए हम असमर्थ हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह रजोगुण, उसमें राजा पालन कर रहा है। शासक मानो देखो रजोगुण से दण्डित कर रहा है और दण्ड देने में भी सतोगुण विद्यमान रहता है। मेरे

पुत्रों! देखो, इसी प्रकार ऋषि ने कहा, क्या ये मानो देखो सतोगुण में पालन, रजोगुण में शासन है और तमोगुण में मानो देखो पालना ही समाप्तम् ब्रव्हे, मानो वो रजोगुण नहीं, केवल तमोगुण रह जाता है। तमोगुण में उत्पत्ति का मूल रह जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उत्पत्ति रह जाती है। माता अपने गर्भ से एक सन्तान को जन्म देना चाहती है। वह अपने स्वामी से कहती हैं, हे प्रभु! हमारी इच्छा है कि हम पुत्र याग चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो ''यागाम् भवितम् ब्रह्मणाः लोकाम्'' मेरे पुत्रों! वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, मेरे पुत्रों! देखो उसमें भी तमोगुण में भी सतोगुण की भावना, उनमें तरङ्गें मुनिवरों! देखो, विद्यमान रहती हैं। मेरे पुत्रों! जैसे काष्ठ में अग्नि विद्यमान रहती है। प्रत्येक स्थूल में अग्नि की देखो अनुभूति होती रहती है इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, तमोगुण में भी सतोगुण की भी अनुभूति है और देखो रजोगुण की भी, और तमोगुण तो अपने में तमोगुण कहलाता ही है। मेरे पुत्रों! देखो उसमें एक उग्र क्रिया है और उग्र क्रिया में तमोगुण वह उत्पत्ति' के मूल में प्रविष्ठ हो जाता है।

मेरे पुत्रों! ऋषि कहता है, हे ब्रह्मचारियो! वही सतोगुण है, वही रजोगुण है और वही तमोगुण कहलाता है। परन्तु अपने में वो सिमटता रहता है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विचित्र है। मेरे प्यारे! देखो, एक-दूसरे के लिए तीनों मनके हैं, एक-दूसरे में पिरोए हुए हैं और एक ही सूत्र में पिरोए जाते हैं। बेटा! तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, क्या ये रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण, इसकी विवेचना तो बड़ी विचित्र है। मैं व्याख्या देने नहीं आया हूँ।

दो होता

केवल ऋषि कहता है, ब्रह्मणे मानो देखो, दो होता और रह गए हैं। प्रकृति और ब्रह्म, दोनों ही होता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, यजमान जब याग करता है, तो अपने में मेरे पुत्रों! यज्ञशाला में विद्यमान हो करके

और वह दो के द्वारा यज्ञ होता रहता है। दो होता कहलाते हैं बेटा! प्रकृति और ब्रह्म। ये दोनों ही मेरे पुत्रों! देखो हुत कर रहे हैं, वह हुत हो रहा है। आहुति दी जा रही हैं।

एक होता

बेटा! देखो वह ब्रह्मणे, प्रकृति को भी जब अपने में सिमेट लेता है तो उस समय बेटा! एक ही ब्रह्म रह जाता है। और वह ब्रह्म सूत्र को जब अपने में पिरो लेता है तो बेटा! आनन्द की पगडण्डी और देखो वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। तो विचार आता रहता है, मेरे पुत्रों! देखो, हम एक ब्रह्म की उपासना, देवत्व की उपासना करने वाले बनते हुए, परन्तु देखो इस सर्व संसार को जानते-जानते, हम बेटा! एकोकी ब्रह्म में अपने को स्वीकार कर लें। **ब्रह्म को अपने में, अपने को ब्रह्म में, तो बेटा! देखो आनन्द की वृष्टि होने लगती है। हम आनन्द में ही प्रवेश कर जाते हैं।** अपने को देखो जब उस द्वितीय भाव वृत्तियों में नहीं रह पाता, तो बेटा! आनन्द क्या, मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

आओ मेरे प्यारे! देखो, **आज का हमारा विचार** क्या है। हम बेटा! इस संसार रूपी यज्ञशाला को अपने में धारण करते रहें, और शरीर रूपी यज्ञशाला को भी हम जानते रहें। क्योंकि जिसमें हमारा आत्मा, हम आत्मा विद्यमान है और परमात्मा सखा भी उसमें विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो, **आत्मा अपने में चिन्तन करने वाला बने, ज्ञान और विज्ञान में रत्त होता रहे** तो बेटा! देखो इस संसार सागर से वो पार हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि परमपिता परमात्मा का जो यह जगत है, ये बड़ा विचित्र है। ये मानो देखो यज्ञशालाएँ बड़ी विचित्रत्व मानी गयी हैं। तो वेद के ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, ...

शेष अनुपलब्ध

दिनाँक : 25 जनवरी, 1990

॥ ओ३म् ॥

शतपथ ब्राह्मण

जीते रहो!

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं। मानो वे वरणीय कहलाते हैं। जो मानव उस परमपिता परमात्मा को अपना वरण बना लेता है अथवा उसे वर लेता है वे प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है कि वो परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं और हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरण बना लेना चाहिए अथवा उसे वर लेना चाहिए, क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही वेदों के ऊपर महान् अनुसन्धान होता रहा है। एक-एक वाक्य को लेकर के ऋषि-मुनियों ने बड़े अनुसन्धान अथवा अपने में रत्त रहने के लिए सदैव मानो तत्पर रहे हैं जिसके ऊपर हमारा जीवन मानो निर्धारित रहता है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! वेद मन्त्रों के ऊपर हमारा प्रायः अन्वेषण होता रहता था अथवा विचार-विनिमय होता, जिन विचारों को लेकर के मानव अपने जीवन को महान् बनाता है। उन्हीं विचारों के ऊपर मानो, हमारे वेदों के ऊपर नाना प्रकार की टिप्पणियाँ और उनके ऊपर विचार-विनिमय होता रहा है।

दो प्रकार की धारा

मानो दोनों प्रकार की धाराओं का जन्म मानव के चिन्तन करने से

प्राप्त होता है। एक मानवीय दर्शन है, एक मानो भौतिक दर्शन है। ये दोनों प्रकार के दर्शनों की चर्चाएँ बहुत पुरातन काल में बेटा! हमारे ऋषि-मुनियों ने कीं। मानव दर्शन के ऊपर तो मानव अपने में आधिपत्य रहा है। परन्तु यहाँ भौतिक विज्ञान की विवेचना आती रहती है और भौतिक दर्शन के ऊपर मानव चिन्तन करता रहता है, उसका बेटा! विज्ञान, मानवीयत्व विज्ञान में परणित हो जाता है। क्योंकि विज्ञान भी अपने में मानो एक अद्वितीय चिन्तन है। जब मेरे प्यारे! देखो, अध्यात्मवादी मानव दर्शन में प्रवेश करता है तो उसके ऊपर बहुत ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ता रहता है। मुझे बहुत पुरातन काल हुआ बेटा! नाना ऋषियों के दर्शन करने के सौभाग्य प्राप्त हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन के ऊपर बड़ा चिन्तन किया है और मनन किया है। परन्तु इसीलिए मानव को मननशील रहना चाहिए और वेदों की ध्वनि के आधार पर अपने को ध्वनित करना चाहिए। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष तुम्हें चर्चा में नहीं, केवल आज का हमारा वेद मन्त्र कहता है कि हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करें। क्योंकि संसार में जिसको जो वर लेता है वो प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हमें परमपिता परमात्मा को प्रायः अपना वरणीय बना लेना चाहिए।

तपस्वी बनने की प्रेरणा

आओ मेरे प्यारे! आज मैं उन वाक्यों में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की वो चर्चाएँ, वो साहित्य हमारे समीप आ रहा था। वेद का मन्त्र कहता है, तपम् तपश्याम् तपम् हृदयाम्, ब्रह्मम् वाचोः तपाः। मेरे प्यारे! ये संसार तपोमयी है। ये संसार तपों की आभा में निहित रहता है। तो वेद का मन्त्र कहता है, हे मानव! तू तपस्वी बन। तू साधक बन कर के अपने प्रभु के समीप पहुँच। परन्तु इसी से तेरा जो मानव दर्शन है, मानवीयता है, मानो उसकी धारा का जन्म होता रहेगा। तो मुनिवरों! देखो, वेद का मन्त्र यही तो कह रहा है कि

मानव तू तपस्वी बन कर के अग्रगणीय बन। तो बेटा! मैं शतपथ ब्राह्मण जिस पोथी का निर्माण महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बारह (12) वर्ष तपने के पश्चात् उन्होंने बेटा! मन को पवित्र किया। मानो तप किसे कहते हैं? **तप कहते हैं जो मानव अपने मन को पवित्र बना लेता है।** मानो देखो मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है और मुनिवरों! देखो, वह जो आहार है, अन्नाद है, वो सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया है। तो अन्न पवित्र होना चाहिए। अन्न मानो जो हमारा पवित्रतम् हो जाता है तो हमारी साधना बलवती हो जाती है। हम साधना में पूर्णरूपेण बन जाते हैं। तो मेरे प्यारे! वेद का ऋषि यही कहता है : अन्नम् ब्रह्मा। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया जिस अन्न के ऊपर अधिकार नहीं था किसी का। उस अन्न को पान करना, इन्द्रियों के ऊपर संयम करना और शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी के ऊपर लेखनीबद्ध करते रहते थे।

माला के तीन मनके

मेरे प्यारे! देखो वह सबसे प्रथम शब्दों में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जो इससे पूर्व काल में मैंने तुम्हें प्रगट कराया। उन्होंने कहा है, प्रश्न किया है। तीन शब्दों को लेकर के तीन शब्दों की रचना की। रचना के पश्चात् पोथी का र्निमाण किया। बेटा! ब्राह्मण कौन है, ब्रह्मचारी कौन है और ब्रह्मवर्चोसी कौन है जो ब्रह्म की चरि को जानता है। ये तीन ही शब्द हैं। ये मानो, ये माला के तीन मनके हैं। मैंने बेटा! मनकों की चर्चाएँ तुम्हें इससे पूर्व काल में माला की चर्चाएँ की थीं। जब ब्राह्मण वेदों का गान गाने लगता है, उद्गीत गाने लगता है तो शब्दों की माला को धारण कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो, वे ज्ञानी जब अपने विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश करता है तो वे परमाणुओं की माला बनाता है। परमाणुओं की माला बना कर के अपने कण्ठ को वो सजातीय बनाता रहता है। मेरे प्यारे! देखो वही वैज्ञानिक जब गम्भीर

मुद्रा में मुद्रित हो जाता है तो एक-दूसरे लोक के ऊपर विचारने लगता है। यह कैसी पवित्र माला है जो मुनिवरों! देखो, योगीजन जिसका बखान करते हैं। तो मैं तीन मनकों की चर्चाएँ कर रहा था। तीन मनकों की चर्चा क्या है, **ब्राह्मण कौन है** यह प्रश्न किया। उत्तर देता है ऋषि जो ब्रह्म को कण-कण में स्वीकार करता है, अपने को ब्रह्म में, ब्रह्म को अपने में जो दृष्टिपात करता है, वो ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो वह घृणा नहीं करता प्राणी से। वह जो अपने को जगत में दृष्टिपात करता है जगत को अपने में, अपने को जगत में। मेरे प्यारे! देखो, वह तो ब्राह्मण है। **ब्रह्मचारी कौन है** जो बेटा! एक-एक श्वास के, श्वास का मनका बना करके बेटा! जो मानो देखो अपने में माला बना कर के अपने को पिरो देता है। मेरे प्यारे! वो ब्रह्मचरिष्यामि कौन है जो मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें वर्णन किया क्या वे ब्रह्मवर्चोसी है जो मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म की चरि को चरने लगता है।

ब्रह्म की चरि

ब्रह्म की चरि क्या है बेटा! मुझे एक काल स्मरण आ गया है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के द्वारा जब यह पोथी का निर्माण किया तो बेटा! देखो एक समय कुछ ऋषि-मुनियों का एक समूह मानो देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचा जब वह तपस्या कर रहे थे। मेरे प्यारे! इसमें देखो ऋषि-मुनियों में बेटा! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, महर्षि सोमवृतिका और महर्षि वैशम्पायन, महर्षि विभाण्डक, महर्षि सोमकेतु, देवर्षि नारद, चाक्राणी गार्गी मुनिवरों! और भी नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज मेरे प्यारे! भ्रमण करता हुआ वे बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि के द्वार पर पहुँचा। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया। उन्होंने कहा, कहो ऋषिवर, कैसे आगमन हुआ है मेरे आश्रम में। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि प्रवाहण और शिलक दोनों बोले कि प्रभु हम आज न्योदा में मन्त्रों का

अध्ययन कर रहे थे परन्तु मन्त्रों में एक वाक्य आ रहा था और वेद मन्त्र यह कहता था कि चरो सम्भवालोकाम् ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्मचरिवोतहम् ब्रह्मवाचोदेवाः। बेटा! उन्होंने यह वेद के शब्दों की रचना उच्चारण की। उन्होंने कहा भगवन् यह वेद के शब्द हैं और यह कहते हैं कि ब्रह्मचरिष्यामि। ब्रह्म की चरि क्या है, जिसे वो मानव चर रहा है वो चरीवान कौन है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म की चरि कौन है इसके उपर विचार-विनिमय करने लगे। तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि ब्रह्म की चरि, **ब्रह्म की चरि यह ब्रह्माण्ड है।** ये जो ब्रह्माण्ड है, जो अङ्ग-उपाङ्गो से ब्रह्माण्ड को जानता है वह ब्रह्म की चरि कहलाती है। उन्होंने कहा प्रभु कैसे चरा जाए। इसके उपर विचार किया जाए। तो मेरे प्यारे! उन्होंने न्योदा में से मन्त्रों का अध्ययन किया और उच्चारण करते हुए कहा कि देखो हे ऋषियों! ये वेद का मन्त्र कहता है, चरि चरणम् ब्रह्मकृतम् लोकाम् प्राथमब्रहे कृतम लोकम् वाचन नमः। वेद का वाक्य यह कहता है क्या चरि को चरना है, तो ब्रह्म की चरि मानो पृथ्वी से लेकर के और वह निहारिका आकाश गङ्गाओं तक चली जाती है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ऋषियों ने कहा प्रभु हमें पहुँचाइये। हम जाने के लिए आए हैं। तो बेटा! देखो एक पंक्ति लगा कर के विद्यमान हो गए ऋषि-मुनि और वे आचार्य याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मवेत्ता जो देखो अब अपनी गाथा प्रकट करने लगा। उन्होंने बेटा! वेद मन्त्र को लेकर के कहा : प्रथम ब्रह्मा सहस्राणि, प्रथम ब्रह्मा सहस्राणि, प्रथम ब्रह्मे वाचो सहस्राणि। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार सहस्राणि का वर्णन किया। उन्होंने कहा क्या ये जो पृथ्वियाँ हैं ये मानो देखो इस समय सहस्र सहस्र हो जाएँ। तो मानो देखो उसकी प्रतिभा और विकृतियाँ बन जाएँ तो मानो देखो ये तीस लाख के बिन्दु पर पहुँच जाती हैं। तो तीस लाख पृथ्वियाँ हैं जिनकी मानो देखो एक माला बनी हुई है। तीस लाख पृथ्वियों की माला बन गई। अब जब वो तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी तो उस माला को कौन धारण कर रहा है। बेटा! सूर्य उस माला

को धारण कर रहा है। मानो तीस लाख पृथ्वियाँ हैं जो मेरे प्यारे! देखो, ये सूर्य अपने कण्ठ में धारण कर लेता है। और मुनिवरों! देखो जब विचार आ गया तो आगे एक माला का वर्णन और आया। सूर्याणि गच्छतम ब्रह्मा, सूर्याणि रुद्राम भवेते लोकाम। उन्होंने कहा कि ये जो सूर्य है ये भी किसी की माला है। एक सहस्र सूर्य की गणना करने के पश्चात् मानो देखो वह बृहस्पति की माला बन गई है। बृहस्पति ने उस माला को धारण कर लिया और बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! एक सहस्र सूर्य समाहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, आगे एक माला का वर्णन और आ गया। वे तो न्योदा के मन्त्र थे। तो उस वेद मन्त्र में पुनः ये आया, सहस्राणि गच्छतम् ब्रह्मे, सहस्राणि व्रतम् ब्रह्मा कृतम् व्रति देवा, वायुअप्रत्तम। मेरे प्यारे! वेद की आख्यायिका कहती है क्या एक सहस्र बृहस्पतियों की माला और उपलब्ध हो गई। बेटा! उस माला को आरुणी मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। उस माला को धारण करके मानो देखो आगे माला, मेरे प्यारे! एक सहस्र, एक सहस्र आरुणी मण्डलों की बेटा! देखो, माला बन कर के उसको ध्रुव ने अपने में धारण कर लिया। बेटा! ध्रुवाणि गच्छतम् ब्रह्मे मनोवृतियाम्।

मेरे पुत्र, आगे वेद की आख्यायिका कहती है कि माला बनती चली गई। बेटा! एक सहस्र सूर्यों की, एक सहस्र मानो देखो ध्रुवों की माला बन कर के मूल नक्षत्र अपने में धारण कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, एक सहस्र मूल नक्षत्र हैं जिनकी माला बना कर के बेटा! देखो वह स्वाति नक्षत्र अपने में धारण कर रहा है। कैसी माला बन गई है मेरे प्रभु की। मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। कैसे माला को सुगठित किया है। वेद का मन्त्र कहता है क्या ऐसी देखो एक सहस्र स्वाति मण्डलों की माला बनी तो उसको अचल मण्डल अपने में धारण कर गया। बेटा! एक सहस्र अचल मण्डलों की माला बनी तो बेटा! उसको रेणकेतु मण्डल अपने में पिरोने वाला बन गया। एक सहस्र रेणकेतुओं की माला

बनी तो बेटा! देखो वह मृचिका उस माला को अपने में धारण कर गया। बेटा! यह कितना विशाल मण्डल है। क्या इसके ऊपर विचार करने वाला जब योगाभ्यासी साधक विचार करता है तो उड़ान कितनी विचित्र बन जाती है। मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले हे ऋषियों, इसी प्रकार मानो देखो, एक सहस्र मृचिका मण्डल ही देखो मानो उस गन्धर्वलोक में ओत-प्रोत हो गए। गन्धर्वलोकों ने उस माला को बना लिया। मेरे प्यारे! देखो यह इतने मण्डलों का एक सौरमण्डल बन गया। बेटा! इतने मण्डलों का सौरमण्डल बना और मुनिवरों! देखो पचासी लाख, उननचास हज़ार, पाँच सौ बावन मुनिवरों! देखो इस प्रकार के सौरमण्डलों का बेटा! एक आकाशगङ्गा बन रही है। एक आकाशगङ्गा दृष्टिपात आने लगी। मेरे पुत्रों! देखो इसी प्रकार जब विचारने से प्रतीत हुआ तो ऋषि समाधिष्थ हो गए और समाधि में जाकर के यह प्रतीत हुआ उन्हें, लघु मस्तिष्क में जब संसार को निहारने लगे तो बेटा! उन्हें एक वाक्य और दृष्टिपात आने लगा। मेरे प्यारे! देखो एक सहस्र क्या माना देखो एक करोड़, नब्बे लाख, पिचानवे हज़ार और मुनिवरों! देखो पाँच सौ तिरपन मुनिवरों! इस प्रकार की आकाशगङ्गाएँ बेटा! निहारिका में समाहित हो गईं। मानो एक निहारिका का निर्माण हुआ। मेरे पुत्रों! देखो, निहारिका नहीं अवन्तिका। और मुनिवरों! देखो, एक करोड़ अवन्तिकाओं की बेटा! एक निहारिका बन गई। बेटा! कैसा अनन्त, ये एक-दूसरे में माला बनी हुई है ब्रह्माण्ड की। तो मुनिवरों! देखो, यह विज्ञान हमारे समीप आता रहता है। हमारा परम्परागतों का बेटा! यह जन्मसिद्ध अधिकार रहा है।

आज मैं कहाँ ले जाना चाहता था, कहाँ चला गया हूँ। मेरे पुत्रों! देखो ऋषि-मुनि चयन करने लगे, उन्होंने कहा क्या, ब्रह्म की चरि क्या है और कौन चरता है बेटा! जो समाधिष्थ होता है, जो अपने लघु मस्तिष्क को जानता है वह ब्रह्म की चरि को चरता है और चर कर के मुनिवरों! देखो, वह मौन हो जाता है।

वृख की विवेचना

आगे वेद का ऋषि कहता है, हे ऋषियो! उन्होंने कहा, प्रभु आपने हमें वृख के सम्बन्ध में भी कहा था। तब मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि वृख को जानना चाहते हों? मैंने तो ये व्याख्या कई काल में की है। आज भी बेटा! मुझे स्मरण आ रही है। वेद का ऋषि कहता है, वृखो संभवे भवे वाचन देवा। ऐसा बेटा! लोलुप्तियों में आता है। मेरे प्यारे! महानून्द जी ने भी मुझे कई काल में ये आख्यायिका प्रकट की है। क्या देवासुर संग्राम होता रहता है और वो सहस्रों वर्षो तक चलता है। तो बेटा! शतपथ ब्राह्मण की पोथी का यह द्वितीय अनुवाक का प्रारम्भ हुआ। वो द्वितीय अनुवाक क्या है? मानो देखो, यह वृख और देवासुर संग्राम क्या है? तो बेटा! देखो, देवासुर संग्राम के ऊपर विचार होने लगा तो बेटा! देवासुर संग्राम ये जो मानव जब साधना में, प्रभु के आङ्गन में जाना चाहता है तो बेटा! देवासुर संग्राम हो रहा है और वो देवासुर संग्राम होते-होते एक समय आता है कि देवता दैत्यों को विजय कर लेते हैं। बेटा! देखो देवताओं ने जब दैत्यों को विजय कर लिया तो बेटा! देवता आनन्दित हो गए। तो कहते हैं कि देवताओं की सभा में एक वृख का जन्म हुआ और उस वृख के जन्म होते ही जो उसकी समझ में आता, जो उसके अनुवाकों को ग्रहण कर लेता वही देवता बनने लगा। जब बेटा! यह संसार देवताओं का बनने लगा, देवत्व को प्राप्त होने लगा यह संसार। तो मुनिवरों! देखो दैत्यों की एक सभा हुई जिसमें मेरे पुत्रों! जिसमें मुनिवरों! देखो महर्षि व्रोतप्रहम भविते ने उच्चारण किया। क्या जब दैत्यों की सभा हुई तो उसमें कौन, देखो उसमें अर्धवौ, मेरे प्यारे! महाराजा विरोचन को निमन्त्रित किया। मुनिवरों! देखो कौन रक्तबीज, तैतव और मुनिवरों! देखो नाना जो दैत्य थे उन्होंने अपने सभापति विरोचन को निश्चित किया। क्या महाराज निर्णय करो, क्या इस वृख का जन्म हुआ है। उस वृख के मुखारबिन्दु से जो ध्वनि उत्पन्न होती है, वही देवता बनता

रहता है। प्रभु, हमारा क्या बनेगा। उन्होंने कहा प्रियतम, तो निर्णय किया जाए। जाओ, वृख को छला जाए। अब बेटा! वृख को यह ज्ञान हो गया था आज तू दैत्यों के द्वारा छला जाएगा। मेरे प्यारे! देखो उसने अपने देवताओं की धरोहर को रेणुका में प्रवेश कर दी थी और मध्य रात्रि में मुनिवरों! देखो कौन, रक्तबीज शुम्भ-निशुम्भ इत्यादियों ने मानो देखो मन्थन किया तो वृख छला गया। वृख को जब छल कर के लाया गया, महाराजा विरोचन ने उसका मन्थन किया तो उन्होंने कहा इसमें वह ध्वनि नहीं है। वह ध्वनि कहाँ गई। वह देवताओं, वो रेणुका में प्रवेश कर गई है। मेरे प्यारे! देखो, वह वृख को वहीं वृक्षित कर दिया। परन्तु देखो जब निष्प्राहा अब मध्य रात्रि में अगले दिवस रेणुका को छलने का उन्होंने कर्म बनाया तो रेणुका ने बेटा! उस देवताओं की धरोहर को मुनिवरों! देखो, यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया था। वह ध्वनि तो यज्ञ के दस पात्रों में चली गई। होताओं के समीप चली गई। मुनिवरों! देखो, जब रेणुका को लाया गया तो विरोचन ने उसका मन्थन किया। उन्होंने कहा–हे दैत्यराजों इसमें वह ध्वनि नहीं है जिससे यह संसार देवताओं का बन रहा था। उन्होंने कहा, महाराज वह कहाँ गई? क्या, वह तो यज्ञ के दस पात्रों में चली गई है उसे तुम निकास नहीं सकोंगे। महाराजा विरोचन ने यह उद्गीत गाया।

मेरे प्यारे! देखो अब विचार आता है कि यह क्या है कि जो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक लोलुप्ति प्रगट की है। इस लोलुप्ति का रूपान्तर क्या है? बेटा! देखो यह देवासुर संग्राम क्या है? जब साधक साधना में प्रवेश करता है तो बेटा! देखो असुर और देव प्रवृत्तियों का, दोनों का संघर्ष होने लगता है। मेरे पुत्र! एक समय वह आता है जब देवता विजयी हो जाते हैं और उनके मुखारबिन्दु से देवताओं की सभा में इस वृख का जन्म हुआ। बेटा! हमारे वैदिक साहित्य में वृख के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द हैं। मानो देखो, वृख नाम गऊ के बछड़े को भी कहा गया है। वृख नाम सूर्य को भी कहा गया है। वृख नाम बेटा!

परमपिता परमात्मा का भी है। वृख नाम मुनिवरों! देखो वृथम् ब्रह्मे वृथाम् देवाः। वृख नाम राजा का भी है। परन्तु **यहाँ प्रकरण से वृख नाम बेटा! मन को कहा गया है।** साधक मन के ऊपर उद्गीत गा रहा है। वह कहता है कि ये वृख मन है। मानो देखो, ये मन जब देवता दैत्यों को विजय कर लेते हैं–काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि व्याधियों के ऊपर देखो आधिपत्य कर लिया जाता है, इनको दमन कर दिया जाता है तो देव प्रवृत्ति बन जाती है। तो यह मन वृख बन कर के, ये मानो देखो, **मन के ही द्वारा तो पवित्र होते हैं।** मुनिवरों! देखो, दैत्यों ने इस मन को छल लिया। क्योंकि मन में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं, एक मानो असुर है, एक देव हैं। जब यह प्रकृति के आवेश में आता है, तो असुर प्रवृत्ति वाला है। परमात्मा के सन्निधान में रहता है तो वहाँ यह मन प्राण के सहयोग से ही गति करता रहता है। तो यह मन वृख कहलाता है यह पवित्र आभा को लेकर के। परन्तु यह दैत्यों के द्वारा अशुद्ध आभा मे परिणत हो गया तो बेटा! यह छला गया और छल करके बेटा! इसका विरुद्ध कर दिया, इसका तिरस्कार कर दिया।

रेणुका

मेरे प्यारे! रेणुका क्या है? मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया कि माता का नाम भी रेणुका है। रेणुका नाम पृथ्वी का है, रेणुका नाम चन्द्रमा की कान्ति का है, रेणुका नाम रात्रि का है। बेटा! देखो रेणुका, रेणुका के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। मेरे प्यारे! देखो नदियों को भी रेणुका कहा जाता है। परन्तु विचार क्या, **यहाँ बुद्धि को रेणुका माना है, प्रकरण से।** क्या रेणुका में वो ध्वनि चली गई। देवताओं की धरोहर तो मेरे प्यारे! देखो, रेणुका पृथ्वी को कहते हैं। रेणुका बुद्धि है। यहाँ बुद्धि है, बेटा! जब यह ध्वनि को जान लेती है कि यह देवताओं की धरोहर है तो बेटा! उसने मानो देखो, धरोहर को यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया।

यज्ञ के पात्र

अब विचार आता है यज्ञ के दस पात्र क्या हैं? बेटा! देखो, जब वही मानव दर्शन हमारे समीप आ गया है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, यह जो हमारा मानव शरीर है, यह मुनिवरों! देखो, एक प्रकार की यज्ञशाला है। यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। मुनिवरों! देखो, **यज्ञशाला के पात्र पाँच हैं।** मानो देखो, इसके दस पात्र भी कोई-कोई कहता है। परन्तु पाँच पात्र हैं। बेटा! पाँच जो ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उनमें वो धर्म समाहित हो जाता है और वो शरीर रूपी बेटा! याग की उपलब्धियाँ होने लगती हैं। मेरे प्यारे! ये जो मानव का शरीर है यह एक यज्ञशाला है जो सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! इसको जन्म दिया था। जिसको उत्पन्न किया था तो मुनिवरों! देखो, वह देवताओं की धरोहर है। वो धर्म ध्वनि बेटा! देखो यज्ञ के दस पात्रों में है। **मानव की इन्द्रियों में धर्म समाहित रहता है।** धर्म बाह्य जगत में तो यह केवल बखान का धर्म कहलाता है। परन्तु वास्तविक धर्म क्या है। मानव की इन्द्रियों में समाहित हो जाता है। मेरे प्यारे! रूप, रस, गन्ध, मुनिवरों! देखो, वह शब्द। और देखो, अप्रताम ब्रह्मे वाचोः स्पर्श है। मुनिवरों! देखो रूप, रस, गन्ध, श्रोत्र, स्पर्श, ये पाँच ज्ञानेन्द्रियों में बेटा! धर्म समाहित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, नेत्र दृष्टिपात करके रूप को लाते हैं तो बेटा! हृदय में स्थिर कर देते हैं। श्रोत्र शब्दों को लाते हैं तो हृदय में, बेटा! देखो, रसना रसों को लाती है तो हृदय में, नासिका घ्राण को मन्द सुगन्ध ला के वो भी हृदय में, मेरे प्यारे! त्वचा प्रेम को लाती है वो भी हृदय में। वाह रे मेरे प्रभु, तेरी कितनी विचित्र यज्ञशाला है यह। क्या मानो देखो एक ही, प्रत्येक इन्द्रियों का एक समूह केन्द्र मानो हृदय ही माना गया है। सर्वम् ग्रथव प्रवा लोकाः। मेरे प्यारे! सर्वत्र लोक लोकान्तर बेटा! इसी में प्रवेश लेते रहते हैं। आज मैं बेटा! कहाँ चला गया हूँ।

मानव दर्शन

मुनिवरों! देखो, ये अपनी धर्म ध्वनि को विचार करके मानव को ऊर्ध्वा की उड़ान उड़नी चाहिए। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए

कहा, विचार देते हुए कहा है हे मानव तू अपने धर्म को जानने का प्रयास कर, धर्म तेरी इन्द्रियों में समाहित रहता है। धर्म तेरे शब्दों में रहता है, धर्म तेरी रसना में रहता है, धर्म तेरी घ्राण में रहता है और धर्म तेरे स्पर्श में रहता है। मेरे पुत्रों! देखो ये कैसा विचित्र, याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि ये यज्ञशाला है, इन मानो देखो हृदयरूपी यज्ञशाला में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है और पाँच ज्ञानेन्द्रियों का साकल्य बना कर के साधक बेटा! उसमें आहुति दे रहा है। आहुति दे रहा है, कह रहा है स्वाहा। मानो देखो, शब्दम् ब्रह्म स्वाहा। बेटा! स्वाहा कह कर अपने हृदय को पवित्र बना रहा है। सौम्यता में परणित कर रहा है। मानव दर्शन को विचार रहा है। बेटा! यही तो मानव दर्शन है जिसक उपर मानव परम्परागतों से ही अन्वेषण करता चला आया है अथवा विचार विनिमय करता चला आया है। क्या मुनिवरों! देखो ब्रह्म वाचो देवम् ब्रहम। मुनिवरों! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब बेटा! अपना ये बखान किया, देखो, शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषिवर आचार्य के चरणों में ओत-प्रोत हो गए। और यह कहा कि धन्य है ऋषिवर आपके इस कौतुक को धन्य है। आपने जो संसार और मानव दर्शन को जाना है, बड़ी विचित्रता है। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ऋषि-मुनियों को यह वाक्य दे कर के बेटा! देखो सभा विसर्जन हो गई।

बेटा! वृखों की चर्चा तो इससे पूर्व काल में ही कर पाऊँगा। आज का विचार तो केवल यह कह रहा है बेटा! हमें परमपिता परमात्मा की उस पवित्र माला को धारण करना चाहिए। तीन सूत्र हैं बेटा! तीन मनके हैं वो ब्रह्म सूत्र में पिरोये हुए हैं। बेटा! ब्राह्मण कौन है, ब्रह्मचारी कौन है और ब्रह्मचरिष्यामि, जो ब्रह्म की चरि को चरता है, वो कौन है। बेटा! ये तीन शब्द हैं, तीन शब्दों की रचना है, रचना के ऊपर व्याख्या बड़ी विचित्र है बेटा! मेरे प्यारे! आज का विचार यह क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करें, अपना वरणीय बनाएँ और उसको अपना वरण करके, बेटा! अपने अन्तर्हृदय में धारण

करके परमपिता परमात्मा की अनुपम गोद में चले जाएँ। मानव दर्शन को जानने वाले बनें। **मानव दर्शन क्या है कि हम अपने अनमोल अङ्ग और उपाङ्गों को जान जाएँ।** उसे सूत्रित करते हुए एक सूत्र मे पिरो दें। बेटा! जैसे मैंने मालाओं की चर्चा की है। ये कैसे सूत्र, देवासुर संग्राम, देखो मन पवित्र हो, दैत्यों का छलना और मुनिवरों! देखो, रेणुका अपने में तटस्थ हो करके उसको, धरोहर को, यज्ञ के दस पात्रों में प्रवेश कर दें। यज्ञ के दस पात्र क्या हैं बेटा! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। जो बाह्य जगत का क्रियाकलाप है वो आन्तरिक जगत में पवित्र बनाता है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं शेष चर्चा तो तुम्हें कल ही प्रकट करूँगा।

आज का विचार तो केवल क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। बेटा! यह यज्ञशाला है, यज्ञशाला में मानो देखो, यजमान आहुति दे रहा है, स्वाहा कह रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा–**विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाएँ, वो हमारा देवता है। उसको हम अपना वरण बना कर के उसी को प्राप्त हो जाएँ।** यह वाक्य अब समाप्त, वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् आरथम् ब्रह्मा वाचा नभरथपप्री बृहीता वायु गताहा।

ओ३म् मनु वायारथो आयम बृीहा आपयाम् लोकम् सर्वाः आभा आन्नगथाः।।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द मंगलाचार! शान्तिः।

दिनाँक : 2 नवम्बर, 1985
समय : दोपहर 2 बजे
स्थान : काशीपुर

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. आज हमें अपने मन को इस प्राकृतिक आवेशों से पृथक् प्रभु के चिन्तन में लगाना है, नास्तिकता को त्यागना है।
2. नास्तिक उसे कहते हैं जो अपने कण्ठ से ऊपर परमात्मा का चिन्तन कर रहा है और हृदय में महान् क्लिष्टता है।
3. माता-पिता के मधु भावों से यह हमारा गृह आश्रम चल रहा है।
4. यह शेष नाग हमारा मन है जिसमें काम, क्रोध, मद, लोभ आदि हमें डसने वाले विष हैं।
5. प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या को अपने हृदय से प्रभु का चिन्तन करना चाहिए।
6. प्रत्येक श्वास प्रश्वास ओ३म् से बिंधा होना चाहिए।
7. आज हमें अपने मन-अपमान को शान्त करना है।
8. अपने विचारों को, अपनी मानसिकता को अपने आन्तरिक विचारों पर अनुशासन करके चलना होगा।
9. अग्नि और वेद का तारतम्य बहुत निकट होता है।
10. मानव हृदयों को ऊँचा बनाने वाला वेद एक अनुपम प्रकाश कहलाता है।
11. महापुरुष वेद के किसी अङ्ग को लेकर चलता है।
12. मानवता ऊँची होनी चाहिए किसी मानव का, किसी जीव का हनन नहीं करना चाहिए।
13. ब्रह्मा नाम परमात्मा का है इसी प्रकार वेदों की रचना का मूल कारण तो आदि ब्रह्मा हैं।
14. मानवता उसी काल में ऊँची बनती है जब हम अपने जीवन में दृढ़ रहते हैं।
15. जब शान्ति पाठ हमारे समक्ष आएगा तो उसे पा करके हम प्राणों में लय हो जाएँगे।

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है–

1.	श्रीमति कालिन्दी राय धर्मपत्नी श्री मंगला राय, वाराणसी	5001 रुपये
2.	श्री राजीव मेहरा, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली	5000 रुपये
3.	श्री देवदत्त त्यागी, ऊषा त्यागी, ग्राम सोहञ्जनी तगान, मुजफ्फरनगर	2101 रुपये
4.	श्री टीटू त्यागी, तलहैटा, मेरठ	2100 रुपये
5.	श्री राजेन्द्र शर्मा, रासना, मेरठ	2000 रुपये
6.	श्री कालूराम त्यागी, मुजफ्फरनगर	1100 रुपये
7.	श्री योगेन्द्र सिंह, बुलंदशहर	1100 रुपये
8.	श्री कृष्ण पाल सिंह बत्रा, करनाल	1100 रुपये
9.	श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नी श्री राज किशोर त्यागी, मकनपुर	1100 रुपये
10.	श्री राज किशोर त्यागी, मकनपुर	1100 रुपये
11.	श्री आदित्य त्यागी, रजपुरा, मेरठ	1100 रुपये
12.	श्रीमति रेनु तुली जी, लाजपत नगर, नई दिल्ली	1100 रुपये
13.	श्री रणवीर सिंह ठेकेदार, हर्रा, बागपत	1100 रुपये
14.	श्री अमित त्यागी, सी-602, वीवीआईपी, राजनगर, गाजियाबाद	501 रुपये
15.	श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, रासना	501 रुपये
16.	श्रीमति रेखा जी, राजकिशोर जी, महादेव, मेरठ	501 रुपये
17.	श्री सर्वेश कुमार, सरधना, मेरठ	500 रुपये
18.	श्री राज किशोर त्यागी, मकनपुर	500 रुपये
19.	श्री महीपाल, तलहैटा	500 रुपये
20.	श्री जयपाल सिंह, शाहदरा	500 रुपये
21.	श्रीमति विमला देवी, बनखण्डा, जिला हापुड़, उ.प्र.	500 रुपये
22.	श्री राजेन्द्र शर्मा, गाँव मिर्जापुर, रासना	500 रुपये
23.	श्री घनश्याम त्यागी, बरनावा	500 रुपये
24.	श्री सतीश त्यागी (टीटू), बहेड़ी, मुजफ्फरनगर	500 रुपये
25.	श्री चिन्तामणि त्यागी, बरला	500 रुपये
26.	श्री विकास चौहान, हर्रा, बागपत	500 रुपये
27.	श्री प्रमोद त्यागी, बुराड़ी	500 रुपये
28.	श्री महेन्द्र सिंह त्यागी जी, घलौली, सहारनपुर	500 रुपये

29. मा. शिवराज व दुष्यन्त त्यागी, दिनकरपुर 251 रुपये
30. श्री गोवर्धन सिंह, काकड़ा 250 रुपये
31. श्री शिवराज त्यागी व दुष्यन्त त्यागी, दिनकरपुर 201 रुपये
32. श्री प्रताप सिंह, फफून्डा 200 रुपये
33. श्री प्रताप सिंह, फफून्डा 200 रुपये
34. श्री सुबोध, स्वामी, खरखौदा 200 रुपये
35. श्री इंद्रजीत सिंह, मोदीनगर, गाजियाबाद 200 रुपये
36. श्री कमल सिंह, मोदी नगर 151 रुपये
37. श्री गोवर्धन सिंह, काकड़ा 151 रुपये
38. श्री कमल सिंह, मोदी नगर 151 रुपये
39. श्री हरी शंकर भारद्वाज, राज चौपला, मोदीनगर 110 रुपये
40. श्री सुभाष चन्द व विकास त्यागी, दिनकरपुर 101 रुपये
41. श्री महेश जी, महादेव, मेरठ 101 रुपये
42. श्री तेजपाल सिंह चौहान, रामनगर, रूड़की, हरिद्वार 101 रुपये
43. श्री योगेश कुमार, कृष्णा नगर, रूड़की, हरिद्वार 101 रुपये
44. श्री यादराम सुपुत्र श्री बलजीत सिंह, भामौरी, सरधना, मेरठ 100 रुपये
45. श्री राजपाल सुपुत्र श्री अर्जुन सिंह, भामौरी, सरधना, मेरठ 100 रुपये
46. श्री सीताराम, एलम, शामली, उ.प्र. 100 रुपये
47. श्री विमल कुमार बख्शी, 104, सुभाषपुरी, कनकड़खेड़ा, मेरठ 100 रुपये
48. श्री राजेन्द्र त्यागी, रहदरा 100 रुपये
49. श्री याद राम सुपुत्र श्री बलबीर, भामौरी, सरधना, मेरठ 100 रुपये
50. श्री रविकान्त त्यागी, बहैड़ी 100 रुपये
51. श्री ब्रह्म सिंह सैनी, काकड़ा 100 रुपये
52. श्री राज कुमार त्यागी, रासना 100 रुपये
53. श्री राजपाल सुपुत्र श्री अर्जुन सिंह, भामौरी, सरधना, मेरठ 100 रुपये
54. श्री योगेन्द्र, फुगाना 100 रुपये
55. श्री सीताराम, शास्त्री नगर, शामली, उ.प्र. 100 रुपये
56. श्री सुशील त्यागी, भंगरौली, बागपत 100 रुपये
57. श्री सतपाल जी, खुरर्मपुर, सलेमाबाद 100 रुपये
58. श्री अजयवीर जी, दाहा, बागपत 100 रुपये
59. श्री दिव्यकांत त्यागी, दिनकरपुर 100 रुपये
60. श्री भीम सिंह जी, सरधना 100 रुपये
61. श्री देवशरण जी, दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर 100 रुपये

62. श्री धनेश त्यागी, इलहा	100 रुपये
63. श्री योगेश जी एवं आरती जी, मेरठ	100 रुपये
64. श्री सतपाल सिंह, रछाड़	100 रुपये
65. गुप्त दान	100 रुपये
66. श्री विनोद त्यागी जी, मुकारी	100 रुपये
67. श्री अशोक त्यागी जी, अमरपुर	100 रुपये
68. श्रीमति सावित्री सैनी धर्मपत्नी श्री वीर सैनी, ग्राम काकड़ा मुजफ्फर नगर, उ.प्र.	51 रुपये
69. श्री ब्रह्म सिंह, बरनावा, उ.प्र.	50 रुपये
70. श्री जशपाल जी, दान्दुपुर	50 रुपये
71. श्री सुरेन्द्र शर्मा, बरनावा, बागपत	21 रुपये
72. श्री रोहित, बरनावा, बागपत, उ.प्र.	5 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की शुभ प्रेरणा से चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन **योगाचार्य अरविन्द शास्त्री जी, गुरुकुल लाक्षागृह**, बरनावा जिला बागपत के ब्रह्मतत्त्व में दिनाँक 8 अक्टूबर 2019 से 13 अक्टूबर 2019 तक त्यागी हॉस्टल वैस्टर्न कचहरी रोड़, मेरठ, उत्तर प्रदेश के प्राङ्गण में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है। जिसमें सभी याज्ञिक प्रेमी अपने परिवार, इष्ट मित्रों व सम्बन्धियों सहित सादर आमन्त्रित है।

आयोजक व निवेदक

आप और हम

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रभु! हम चाहते क्या हैं? हमारी कामना क्या है? हमारी एक ही तो कामना है कि हमारा हृदय स्वच्छ बन जाए। हमारे हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो जाए। हम सत्य को स्वीकार करने लगें। सत्य क्या है? सत्य वह कहलाता है जो प्रभु का दिग्दर्शन है, सत्य मानवीय दर्शन है। मानवीय दर्शन क्या है? अपने में ही अपनेपन का दर्शन करना, वह मानवीय दर्शन कहलाता है।

इसीलिए हे प्रभु! मैं श्रद्धा के क्षेत्र में जाना चाहता हूँ। क्योंकि श्रद्धा हृदय में रहती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 565
अक्टूबर 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-10-2019
Published on 5th day of the same month